



BACKGROUNDS
Press Information Bureau
Government of India

पैमाना: **डेटा-आधारित इंफ्रास्ट्रक्चर गवर्नेंस को मज़बूत करना**

10 अगस्त, 2026

पैमाना: एक परिचय

इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स को समय पर लागू करने, पारदर्शिता और गवर्नेंस के लिए उनकी कुशल निगरानी ज़रूरी है। इसी मकसद से, भारत में सेंट्रल सेक्टर के इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स की निगरानी के लिए 25 सितंबर 2025 को एक वेब-आधारित प्लेटफॉर्म पैमाना (राष्ट्र-निर्माण के लिए प्रोजेक्ट असेसमेंट, इंफ्रास्ट्रक्चर मॉनिटरिंग और एनालिटिक्स) लॉन्च किया गया था। यह प्लेटफॉर्म पहले के OCMS-2006 (ऑनलाइन कंप्यूटराइज्ड मॉनिटरिंग सिस्टम) की जगह लेता है। सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) द्वारा विकसित, PAIMANA का इस्तेमाल ₹150 करोड़ या उससे ज़्यादा लागत वाले सेंट्रल सेक्टर के चल रहे इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स की निगरानी के लिए किया जाता है।

MoSPI ने 08 जुलाई 2026 को PAIMANA-CRIP नाम का एक मॉड्यूल लॉन्च किया, जिसने DPIIT के इंटीग्रेटेड प्रोजेक्ट मॉनिटरिंग पोर्टल (IPMP) की जगह ली है। इसे इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स के सेंट्रल रिपॉजिटरी (केंद्रीय भंडार) के तौर पर विकसित करने की योजना है। प्रगति (प्रो-एक्टिव

गवर्नेंस एंड टाइमली इम्प्लीमेंटेशन), पीएमजी और अन्य समीक्षा तंत्रों के लिए प्रोजेक्ट से जुड़ा डेटा बाद में इसी के ज़रिए लिया और अपडेट किया जाएगा।

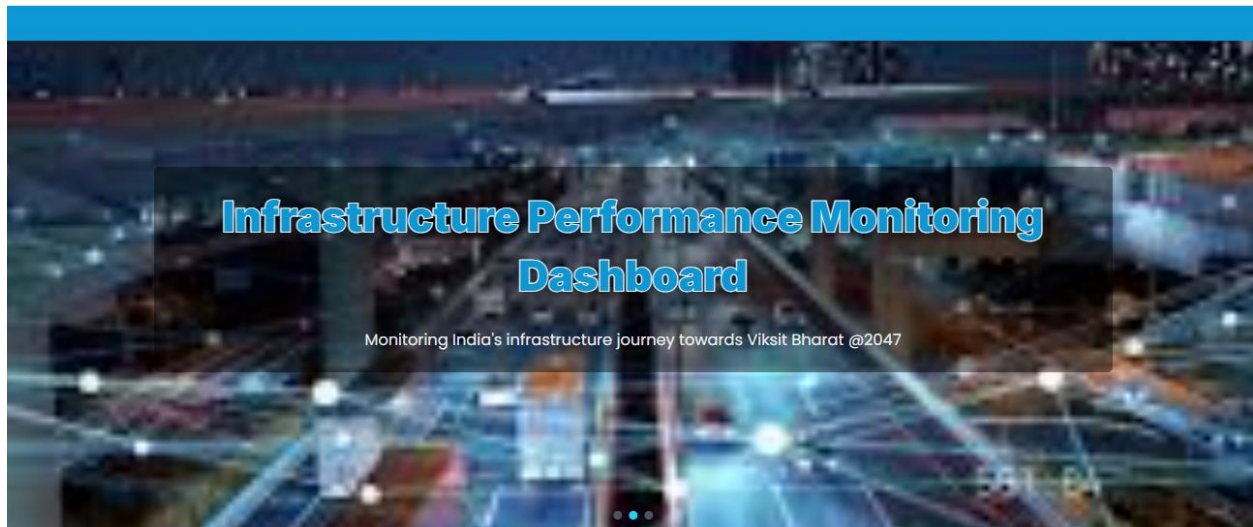
20 से ज़्यादा मंत्रालय/विभाग/कार्यान्वयन एजेंसियां डेटा एंट्री या API (एप्लीकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफेस) मोड के ज़रिए PAIMANA-CRIP पर प्रोजेक्ट्स की जानकारी नियमित रूप से अपडेट करती हैं।

फिलहाल, PAIMANA पोर्टल का प्रोजेक्ट मॉनिटरिंग वर्टिकल API-आधारित डेटा एक्सचेंज के ज़रिए DPIIT के IPMP/IIG के साथ जुड़ा हुआ है। PAIMANA पर 60 प्रतिशत से ज़्यादा प्रोजेक्ट्स संबंधित मंत्रालयों/विभागों के MIS या वेब प्लेटफॉर्म से API के ज़रिए अपने-आप अपडेट हो रहे हैं।

प्रोजेक्ट मॉनिटरिंग को मज़बूत करने के अलावा, पैमाना ने एक समर्पित परफॉर्मेंस मॉनिटरिंग डैशबोर्ड के ज़रिए इंफ्रास्ट्रक्चर परफॉर्मेंस की निगरानी में मदद करने के लिए अपनी भूमिका का विस्तार किया है। 16 अप्रैल 2026 को लॉन्च किया गया यह डैशबोर्ड व्यापक संकेतकों के सेट के ज़रिए प्रमुख उप-क्षेत्रों में इंफ्रास्ट्रक्चर परफॉर्मेंस को ट्रैक करता है। यह डेटा-आधारित गवर्नेंस और सबूत-आधारित नीति-निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रगति है।

परफॉर्मेंस मॉनिटरिंग डैशबोर्ड - एक नज़र में

परफॉर्मेंस मॉनिटरिंग डैशबोर्ड मुख्य इंफ्रास्ट्रक्चर सेक्टर के परफॉर्मेंस इंडिकेटर्स (प्रदर्शन संकेतकों) को एक ही डिजिटल प्लेटफॉर्म पर लाता है। ये इंडिकेटर्स संबंधित मंत्रालयों और विभागों द्वारा दिए गए या पब्लिश किए गए ऑफिशियल डेटा से इकट्ठा किए जाते हैं और लेटेस्ट जानकारी के आधार पर समय-समय पर अपडेट किए जाते हैं। डैशबोर्ड इन डेटा को इंटरैक्टिव विज़ुअलाइज़ेशन और एनालिटिकल टूल्स के ज़रिए दिखाता है, जिससे यूज़र्स ट्रेंड्स को मॉनिटर कर सकते हैं और समय के साथ सेक्टर के परफॉर्मेंस का आकलन कर सकते हैं।



परफॉर्मेंस मॉनिटरिंग डैशबोर्ड की मुख्य विशेषताएं

- परफॉर्मेंस मॉनिटरिंग डैशबोर्ड को नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक फाइनेंस एंड पॉलिसी (NIPFP) के साथ मिलकर तैयार किए गए एक व्यापक इंडिकेटर फ्रेमवर्क पर बनाया गया है। यह फ्रेमवर्क डिपार्टमेंट ऑफ इकोनॉमिक अफेयर्स (DEA) द्वारा जारी इंफ्रास्ट्रक्चर की हार्मोनाइज़्ड मास्टर लिस्ट (HML) (2022) के अनुरूप है। यह लिस्ट उन इंफ्रास्ट्रक्चर सेक्टर के लिए नेशनल क्लासिफिकेशन फ्रेमवर्क का काम करती है जो पॉलिसी सपोर्ट, इन्वेस्टमेंट प्लानिंग और फाइनेंसिंग से जुड़े फायदों के लिए योग्य हैं।
- इंडिकेटर्स को इस तरह से व्यवस्थित किया गया है कि वे पहले से मौजूद इंडेक्स के साथ ओवरलैप न हों। उदाहरण के लिए, इंडेक्स ऑफ इंडस्ट्रियल प्रोडक्शन (IIP) और आठ कोर इंडस्ट्रीज़।

- एक विस्तृत इंडिकेटर फ्रेमवर्क छह इंफ्रास्ट्रक्चर सब-सेक्टर को कवर करता है। ये हैं - पावर, सिविल एविएशन, टेलीकम्युनिकेशंस, रेलवे, सड़कें, और पोर्ट्स, शिपिंग और वॉटरवेज़।
- परफॉर्मेंस मॉनिटरिंग डैशबोर्ड का दायरा अब 165 इंडिकेटर्स तक बढ़ा दिया गया है। इस विस्तार में 54 नए इंडिकेटर्स को शामिल किया गया है, जिससे इंफ्रास्ट्रक्चर परफॉर्मेंस की मॉनिटरिंग और भी व्यापक हो गई है।
- एक ही डिजिटल इंटरफ़ेस से हर सेक्टर के परफॉर्मेंस की मॉनिटरिंग की जा सकती है। यह पॉलिसी बनाने वालों, रिसर्चर्स और स्टैकहोल्डर्स के लिए इंटरैक्टिव विज़ुअलाइज़ेशन और टाइम-सीरीज़ एनालिसिस की सुविधा देता है।
- एक सेंट्रलाइज़्ड डैशबोर्ड इंफ्रास्ट्रक्चर सेक्टर का एक मिला-जुला (क्रॉस-सेक्टर) नज़रिया देता है। यह क्षमता अलग-अलग सेक्टर के बीच एनालिसिस को और गहरा बनाती है।
- मौजूदा फ्रेमवर्क ग्रोथ रेट्स के ज़रिए सेक्टर के परफॉर्मेंस को मापता है। यह चुने हुए सेक्टर में साल-दर-साल, महीने-दर-महीने और कुल ग्रोथ, टारगेट और कैपेसिटी यूटिलाइज़ेशन की समीक्षा करता है।

उप-क्षेत्रों में प्रदर्शन संकेतकों का वितरण (16 जुलाई, 2026 तक)

क्रमांक	ढांचागत उप-क्षेत्र	कुल संकेतक
1	नागरिक उड्डयन	31
2	सड़कें	8
3	पावर	14
4	बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग	62
5	दूरसंचार	13
6	रेलवे	37
कुल		165

निगरानी का नया दृष्टिकोण

इस नए दृष्टिकोण में क्षेत्रीय उत्पादन (आउटपुट) मापने के बजाय बहुआयामी बुनियादी ढांचे के प्रदर्शन का आकलन किया जाता है। इसमें पहुँच (जिससे बुनियादी ढांचे की व्यापक उपलब्धता का पता चलता है), गुणवत्ता (जिससे इसकी उपयोगिता और विश्वसनीयता का आकलन होता है), वित्तीय लागत एवं राजस्व (जिससे बुनियादी ढांचे के लिए वित्तीय संसाधनों के आवंटन और उपयोग का आकलन होता है), उपयोग (जिससे यह मूल्यांकन होता है कि बुनियादी ढांचे का उसके निर्धारित उद्देश्य के लिए कितनी कुशलता से उपयोग किया जा रहा है), और वहनीयता (जिससे यह निर्धारित होता है कि क्या यह आर्थिक रूप से लोगों के लिए सुलभ है) जैसे आयाम शामिल हैं। संकेतकों का उपरोक्त वर्गीकरण सरल उत्पादन ट्रेकिंग से आगे बढ़कर कई आयामों में बुनियादी ढांचे के प्रदर्शन का अधिक समग्र मूल्यांकन करके विश्लेषण को बेहतर बनाता है, जिससे सूचित नीतिगत निर्णय और लक्षित हस्तक्षेप संभव हो पाते हैं।

स्टेकहोल्डर्स को शामिल करना

संबंधित मंत्रालयों और विभागों सहित सभी स्टेकहोल्डर्स को उनके प्रोजेक्ट के काम के बारे में रेगुलर अपडेट मिलते रहते हैं। ये अपडेट पैमाना में तैयार किए गए डेटा एनालिटिक्स पर आधारित होते हैं। इस तरह का एनालिटिक्स उन्हें उन जगहों पर कार्रवाई करने में मदद करता है जहाँ प्रोजेक्ट के काम पर ध्यान देने की ज़रूरत होती है।

- हर महीने होने वाली रिव्यू मीटिंग और अन्य बातचीत के ज़रिए लगातार तालमेल बना रहता है। यह तरीका परफॉर्मेंस इंडिकेटर्स पर समय-समय पर अपडेट देकर सबूतों पर आधारित मॉनिटरिंग को मज़बूत करता है।
- हर लाइन मिनिस्ट्री और डिपार्टमेंट के पास खास तौर पर तैयार किए गए डैशबोर्ड के लिए लॉगिन क्रेडेंशियल उपलब्ध हैं। नतीजतन, वे प्रोजेक्ट की प्रगति की समीक्षा करने के लिए सीधे पोर्टल का इस्तेमाल कर सकते हैं।

मॉनिटर किए गए इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट (जून 2026 तक का डेटा)

- जून 2026 तक, **17 केंद्रीय मंत्रालयों और विभागों** में **1,847 प्रोजेक्ट** चल रहे थे और उनकी निगरानी की जा रही थी। इन सभी की कुल संशोधित लागत **₹40.54 लाख करोड़** है।
- इन प्रोजेक्ट पर अब तक **₹21.97 लाख करोड़** खर्च हो चुके हैं। यह संशोधित लागत का लगभग **54.18 प्रतिशत** है, जो लगातार हो रही प्रगति को दर्शाता है।
- कई प्रोजेक्ट पूरे होने के अंतिम चरणों में पहुँच चुके हैं। लगभग **709 प्रोजेक्ट (~39%)** में 80% से ज़्यादा फिजिकल प्रोग्रेस हो चुकी है। लगभग **337 प्रोजेक्ट (~19%)** में 80% से ज़्यादा फाइनेंशियल काम पूरा हो चुका है।
- चल रहे प्रोजेक्ट की संख्या के मामले में ट्रांसपोर्ट और लॉजिस्टिक्स सेक्टर सबसे आगे है। इसमें **₹22.32 लाख करोड़** की लागत वाले **1,341 प्रोजेक्ट** शामिल हैं, जो कनेक्टिविटी पर दिए जा रहे जोर को दर्शाते हैं।
- चल रहे इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट में **769 मेगा प्रोजेक्ट** शामिल हैं, जिनमें से हर एक की लागत **₹1,000 करोड़** या उससे ज़्यादा है और इनकी कुल लागत **₹30.51 लाख करोड़** है।
- इनमें **1,078 बड़े प्रोजेक्ट** भी शामिल हैं, जिनमें से हर एक की लागत **₹150-1,000 करोड़** के बीच है और इनकी कुल लागत **₹5.10 लाख करोड़** है।

इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स की मंत्रालय/विभाग-वार प्रगति

- सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय के पास सबसे ज़्यादा प्रोजेक्ट्स हैं। यह **1,022 प्रोजेक्ट्स (55%)** का प्रबंधन करता है, जिनकी संशोधित लागत **₹9.89 लाख करोड़ (24%)** है।

- रेल मंत्रालय **255 प्रोजेक्ट्स** (14%) पर काम कर रहा है। इनकी कुल संशोधित लागत **₹8.69 लाख करोड़** (21%) है।
- कोयला मंत्रालय **121 प्रोजेक्ट्स** (7%) चला रहा है। इनकी कुल संशोधित लागत **₹2.22 लाख करोड़** (6%) है।
- चार अन्य मंत्रालय/विभाग भी बड़ी संख्या में प्रोजेक्ट्स लागू कर रहे हैं।
 - पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय **₹4.33 लाख करोड़** की संशोधित लागत वाले **105 प्रोजेक्ट्स** का प्रबंधन कर रहा है।
 - ऊर्जा मंत्रालय **₹5.71 लाख करोड़** की संशोधित लागत वाले **98 प्रोजेक्ट्स** संभाल रहा है।
 - आवास और शहरी मामलों का मंत्रालय **₹3.65 लाख करोड़** की संशोधित लागत वाले **50 प्रोजेक्ट्स** लागू कर रहा है।
 - जल संसाधन, नदी विकास और गंगा कायाकल्प विभाग **₹2.04 लाख करोड़** की संशोधित लागत वाले **40 प्रोजेक्ट्स** का प्रबंधन कर रहा है।
- अन्य **156 प्रोजेक्ट्स** (8%) की कुल संशोधित लागत **₹4.02 लाख करोड़** (10%) है। ये कई मंत्रालयों और विभागों में फैले हुए हैं, जैसे उच्च शिक्षा, नागरिक उड्डयन, इस्पात, दूरसंचार, श्रम और रोजगार, बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, खान, DPIIT और खेल।

डेटा गवर्नेंस की ओर

PAIMANA पोर्टल, जिसमें इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स के केंद्रीय रिपोर्टिंग के मॉड्यूल और ₹150 करोड़ या उससे अधिक लागत वाले केंद्रीय क्षेत्र के प्रोजेक्ट्स के ओवरव्यू पर रिपोर्ट/डैशबोर्ड के रूप में परिणाम शामिल हैं, साथ ही परफॉर्मेंस मॉनिटरिंग डैशबोर्ड, पारदर्शिता, दक्षता और जवाबदेही की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा। इनके नियमित अपडेट इंफ्रास्ट्रक्चर की निगरानी को मजबूत करते हैं। ये सबूत-आधारित नीति-निर्माण में मदद करते हैं और सही जानकारी के आधार पर फैसले लेने में सक्षम बनाते हैं। कुल मिलाकर, यह प्रयास देश भर में टिकाऊ और समावेशी इंफ्रास्ट्रक्चर विकास को बढ़ावा देता है।

संदर्भ:

सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI):

<https://paimana-proj.mospi.gov.in/ReportPage>

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2286550®=%203&lang=1>

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2285365®=48&lang=1>

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2226267®=3&lang=1>

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2252587®=3&lang=1>

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2244898®=3&lang=1>

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2277758®=48&lang=2>

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2290413®=48&lang=1>

पीआईबी शोध

पीके/केसी/एनएम